REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2024

महाराष्ट्र में हिंदी अध्ययन - अध्यापन का स्वरूप और समस्याएं

कुंदा वासुदेव काळबांडे
अधिव्याख्याता हिंदी (वर्ग-ब)
कनिष्ठ महाविद्यालय, वसंतराव नाईक शासकीय कला व समाजविज्ञान संस्था नागपूर.

प्रस्तावना

'महाराष्ट्र' भारत में प्रमुख राज्य है। 'महाराष्ट्र' शब्द संस्कृत का है, जो दो अक्षरों से मिलकर बना है 'महा' और 'राष्ट्र' इसका अर्थ होता है 'महान देश' । महाराष्ट्र प्रमुखतः संतों का क्षेत्र रहा है, इसलिए इसका अपना एक अलग महत्त्व है। महाराष्ट्र राज्य की प्रमुख भाषा "मराठी" है। भाषिक प्रदेश रचना के अनुसार महाराष्ट्र राज्य में मराठी भाषिक लोगों का वास्तव्य हैं। इसके अलावा महाराष्ट्र की पहचान छत्रपति शिवाजी महाराज से होती है। भाषिक मुद्दों में महाराष्ट्र हमेशा सुर्खियों में रहा है। भाषिक संघर्ष भी होता रहा है, परंतु वह राजकीय पटल की एक नीति के रूप में इसे देखा जा सकता है। महाराष्ट्र में हालाँकि सभी भाषा के लोग रहते हैं, उनकी मात्रा कम-अधिक दिखाई देती है, परंतु वे अपने अस्तित्व के साथ महाराष्ट्र में रच-बस गये हैं।

महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई है, यह भारत की आर्थिक राजधानी है इसलिए इस प्रदेश में भारत के तथा भारत के बाहर के लोगों का आना-जाना बना रहता है। जिसका यहाँ की भाषा और व्यवहार पर काफी प्रभाव पड़ा है। महाराष्ट्र प्रांत की रचना के पूर्व भी महाराष्ट्र का अपना एक इतिहास है। डॉ. अंबादास देशमुख के अनुसार, "ई.स. 500 में 'महावंश' नाम के 'बौद्धग्रंथ' में उल्लेख मिलता है. 'महार', 'रट्ट' (राष्ट्रीय) दो जाति वाचक संज्ञाओं के संयोग से 'महाराष्ट्र' यह देशवाचक नाम बना है।"[1] महाराष्ट्र को ऋग्वेद में 'राष्ट्र' नाम से संबोधित किया गया। वे और आगे कहते हैं कि "अशोक के कालखंड में 'राष्ट्रीक' और बाद में इसे 'महाराष्ट्र' इस नाम से इसे जाना जाने लगा ऐसा ह्यून-त्सांग और अन्य मुसाफिरों ने दर्ज किया।"[2] किंतु महाराष्ट्र के संदर्भ में कुछ लोगों का यह भी मानना है कि "यह नाम 'महा-केतारा' (महान-वनोदंडकारण्य) इस शब्द का अपभ्रंश है।[3] अतः महाराष्ट्र का निर्माण भलेही 1 मई, 1960 को हुआ परंतु इसका अस्तित्व प्राचीन काल से हैं।

महाराष्ट्र में हिंदी भाषा

महाराष्ट्र में हिंदी भाषा का प्रचलन आदिकाल से माना जा सकता है। डॉ. रणजीत जाधव के अनुसार, "12 वीं शताब्दी में नाथ पंथ के प्रवर्तक गोरखनाथ के सिद्धांतों का महाराष्ट्र पर अच्छा असर हुआ। गोरखनाथ

स्वयं धर्मप्रचार हेतु मराठी प्रदेश में आये थे और उस समय के कई विद्वान उनके शिष्य हो गए थे। साहित्य में उस समय प्रेमधारा, भक्तिधारा एवं सगुण और निर्गुण की विचारधारा गति के साथ प्रवाहित हुई।... प्रत्येक नाथ-पंथी साधु-संत की हिंदी रचनाएँ मराठी साहित्य में मिलती है।"[4] इसके साथ ही ज्ञानेश्वर, मुक्ताबाई, नामदेव, भानुदास, जनार्दन स्वामी, एकनाथ, अमृतराय की कुछ मात्रा में हिंदी रचनाएँ भी मिल जाती हैं। "मुसलमानों के भिन्न-भिन्न वंशी सुलतानों ने ई.सन् 1300 से 1853 तक आंध्र, कर्नाटक, मराठवाडा या पूरे महाराष्ट्र पर शासन किया जिससे पारस्परिक विचार-विनिमय के लिए हिंदुस्तानी भाषा का अच्छा प्रचार हुआ। उसी प्रकार मुसलमान फकीर और संतों ने भी इस दृष्टि से बहुत कुछ कार्य किया है।"[5] इस प्रकार महाराष्ट्र में मुसलमान शासकों, फकीरों, सूफिओं के आने के कारण हिंदी का काफी मात्रा में प्रचार मिलता है। यहाँ तक कि छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्य में भी कम-अधिक मात्रा में हिंदी शब्दों का प्रचलन होता रहा है। रणजीत जाधव के अनुसार, "छत्रपति शिवाजी के पूर्ववर्ती, तत्कालीन तथा परवर्ती साधु-संतों को स्वधर्म प्रचार के लिए तथा परधर्मियों पर सिक्का जमाने के लिए हिंदी का सहारा लेना पड़ता था।"[6] इसके साथ ही वे और आगे कहते हैं कि, "महाराष्ट्र के कथाकार और कीर्तनकारों ने मराठी भाषियों में हिंदी का प्रचार बड़ी सुंदरता से किया है। मराठी में कीर्तन की एक विशिष्ट परंपरा है और उसका समाज पर असर भी होता है। कीर्तनकार अपने कीर्तन में हिंदी पदों का प्रयोग करते थे और उनमें से कुछ लोग हिंदी में भी पद्य रचना करते थे।"[7] इसके साथ ही रणजीत जाधव मराठी भाषा और हिंदी भाषा के अंतःसंबंध होने के कारण महाराष्ट्र में हिंदी भाषा के प्रचलन का कारण मानते हैं।

भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "जैसा कि नाम से स्पष्ट है यह हिंदी बंबई में बोली जाती है। इसका मूल आधार तो मानक हिंदी है किन्तु इस पर मराठी और गुजराती तथा राजस्थानी, अवधी, भोजपुरी आदि हिंदी बोलियों का प्रभाव पड़ा है। बंबइया हिंदी किसी की मातृभाषा नहीं है। यह मात्र सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त होती है, लेखन या औपचारिक स्थितियों में नहीं। यो अब फिल्मी हिंदी में इसके प्रयोग अवश्य कभी-कभार मिल जाते हैं। उसी प्रभाव से बंबई के लेखकों के कथा-साहित्य में भी इसे कहीं-कहीं पाया जा सकता है। जगदंबा प्रसाद दीक्षित का उपन्यास 'मुर्दाघर' तो मुख्यतः प्रायः इसी हिंदी में लिखा गया है।[8] अतः महाराष्ट्र में हिंदी भाषा का प्रचलन आदिकाल से रहा है, जो भक्तिमार्गियों के द्वारा संप्रेषित हुई और अब रोजगार की भाषा और मीडिया के भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। हिंदी फिल्मी जगत मुंबई से जुड़ा है. जो महाराष्ट्र की राजधानी है, इसलिए संपूर्ण महाराष्ट्र में भी हिंदी का प्रचलन काफी मात्रा में दिखाई देता है।

हिंदी अध्ययन-अध्यापन के उद्देश्य

अध्ययन-अध्यापन यह एक ज्ञानात्मक, अनुभवात्मक प्रक्रिया है। जिसमें छात्र को अनुभव से अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया जाता है, तथा शिक्षक अपने अनुभवों के द्वारा छात्रों के पूर्व अनुभवों से साध्यम्यं स्थापित करते हुए शिक्षित करता है। जिसमें छात्रों के पूर्व अनुभवों का होना आवश्यक होता है। जिसके बहुत से उद्देश्य हो सकते हैं। हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन तथा किसी भी भाषा के अध्ययन-अध्यापन में ऊपरी तौर पर कोई अंतर नहीं लगता परंतु राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन और किसी भाषा के रूप में किसी और भाषा का अध्ययन-अध्यापन में जरुर अंतर होता है। जिससे उसके उद्देश्यों में भी परिवर्तन दिखाई देता है।

किसी भी भाषा को सीखते समय उसमें भाषा के बोलने, पढ़ने, लिखने तथा उसका सृजनात्मक लेखन करने तक भाषा के अध्ययन-अध्यापन के उद्देश्य हो सकते हैं। परंतु हिंदी भाषा के द्वारा केवल बोलने, पढ़ने, लिखने तथा सृजनात्मक लेखन तक उसके उद्देश्य नहीं है बल्कि इससे देश की राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीयता का स्वर अधिक प्रखर होने की दृष्टि से भी हिंदी भाषा का महत्त्व है।[9] हिंदी भाषा केवल एक व्यक्ति के अभिव्यक्ति तक मर्यादित न होकर वह राष्ट्र की अभिव्यक्ति के रूप में उसका स्थान है। इसलिए हिंदी भाषा शिक्षण अर्थात् अध्ययन-अध्यापन के उद्देश्यों को देखना आवश्यक हो जाता है।

1. महाराष्ट्र में हिंदी अध्ययन - अध्यापन का स्वरूप और समस्याओं को समझाना।
2. हिंदी अध्ययन के माध्यम से सभी छात्रों में भावनाओं का विकास होना।
3. साहित्यिक प्रेरणा देना जिससे वे साहित्य में रुचि लेना आरम्भ कर देते हैं।
4. हिंदी में छात्रों के मनोरंजन एवं रूचि को बनाए रखने के लिए उपन्यासों, कहानियों एवं नाटकों की रचना प्रक्रिया को समझाना।

उपन्यास अध्ययन-अध्यापन

हिंदी अध्ययन-अध्यापन में उपन्यास की विशेष भूमिका होती है। 'उपन्यास' अध्ययन-अध्यापन में कक्षा में अध्यापक के द्वारा सीधे ही पढ़ाया जा सकता है। सबसे पहले 'उपन्यास' की समीक्षा के द्वारा छात्रों को पढ़ाया जाता है। कथावस्तु, देशकाल, भाषा-शैली, पात्र एवं उद्देश्यों की आलोचना की जाती है। जिसमें सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया जाता है।

'प्रतिवेदनों' के द्वारा उपन्यास की विषय वस्तु एवं उपन्यास का सारांश ज्ञात हो जाता है। इसमें प्रश्न-उत्तर का प्रयोग किया जाता है। डॉ. सुभाष चंद्र झा के अनुसार, इसमें "छात्र एकत्र होकर अपने-अपने प्रतिवेदनों को शिक्षक के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। और शिक्षक उनके प्रतिवेदनों का विश्लेषण करता चला जाएगा।[10] 'स्वाध्याय' के द्वारा छात्रों को स्वयं स्वतन्त्र रूप से अध्ययन के लिए प्रेरित किया जाता है। जिसमें छात्रों का प्रत्येक वर्ग अपने-अपने बिन्दुओं को जिनका सम्बन्ध उपन्यास से होता है जुटाया जाता है और कक्षा के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। इससे भी कक्षा के सभी छात्रों के समक्ष उपन्यास के सम्बन्धित सभी विषय सामग्री उपस्थित हो जाती है।[11] अतः स्वाध्याय छात्रों के ज्ञानार्जन के लिए बहुत लाभदायक है, जो उपन्यास शिक्षण-क्रम के लिए आवश्यक तत्त्व है।

कविता अध्ययन-अध्यापन

कविता हिंदी साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है। हिंदी शिक्षण में कविता शिक्षण को भी महत्त्व दिया जाता है। कविता शिक्षण में प्रस्तावना, प्रस्तुतिकरण, बोध परीक्षा, काठिन्य-निवारण, सस्वर पाठ, भाव-विश्लेषण, आदर्श पाठ, पुनरावृत्ति, मूल्यांकन, गृह-कार्य आदि शिक्षण क्रम का प्रयोग किया जाता है। जिसमें छात्र और अध्यापक की भागीदारी महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

वर्तमान में सभी विद्यालयों में कविता शिक्षण में समीक्षा, तुलना, व्यास, खण्डान्वय, व्याख्या, अर्थ-बोध, गीत तथा अभिनय प्रणालियों का प्रयोग किया जाता है। समीक्षा प्रणाली में "शिक्षक प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता की समीक्षा करता है। उसके पश्चात् शिक्षक छात्रों को उस कवि के द्वारा रचित कविताओं की समीक्षा करने की ओर बल दिया जाता है।"[12] तो तुलनात्मक प्रणाली में "भिन्न-भाषा कवि की तुलना, सम- भाषा कविता की तुलना तथा भाव-तुलना आदि सभी के द्वारा असाम्य एवं साम्य दोनों स्थितियों का वर्णन किया

जाता है। दो समान एवं असमान कवियों के द्वारा रचित विभिन्न प्रकार की कविताओं की आपस में तुलना करके शिक्षक छात्रों को कविता का अध्ययन करा सकता है।"[13] व्यास प्रणाली में उच्च श्रेणी की भावना प्रधान कविताओं को पढ़ाया जाता है। "जिन कविताओं में भावना की अभिव्यक्ति बहुत उच्च श्रेणी में की जाती है उनके भावों को स्पष्ट करने के लिए व्यास प्रणाली का उपयोग किया जाना विशेष लाभदायक सिद्ध होता है।"[14] इस प्रकार व्यास प्रणाली में बालकों को विषय के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए बल दिया जाता है।

व्याकरण अध्ययन-अध्यापन

हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन में 'व्याकरण' का विशेष महत्त्व है। लक्ष्मी कुट्टी अम्मा के अनुसार, "व्याकरण, प्रचलित भाषा की रचना, शब्द-समूहों की व्यवस्था, साधारण और विशेष प्रयोगों का रहस्य, नियमों द्वारा निर्धारित करता है।[15] जैगर के अनुसार, "प्रचलित भाषा सम्बन्धी नियमों का कथन करना व्याकरण है।[16] जिसके अध्ययन से छात्रों में भाषागत संरचना तथा अर्थगत बोधगम्यता हो जाती है। भाषा की शुद्धता-अशुद्धता की दृष्टि से व्याकरण का अध्ययन-अध्यापन आवश्यक है। डॉ. सुभाष चंद्र गुप्ता के अनुसार, "व्याकरण के आधार पर विद्यार्थी हिंदी भाषा को सुव्यवस्थित ढंग से सीख पाने में सक्षम होता है। इस प्रकार व्याकरण न केवल छात्र की उच्चारण शक्ति को बढ़ावा देते हैं बल्कि इससे छात्र अपने भाषा शिक्षण को भी सुगम बनाने में सक्षम होता है।[17]

गद्य अध्ययन-अध्यापन

गद्य के अंतर्गत समीक्षा, ललित निबन्धों, जीवनी, रेखाचित्रों, हास्य-व्यंग्य, यात्रा- वर्णन, रिपोर्ताज, आत्म-कथा, गद्य-काव्य, निबन्ध आदि का समावेश होता है। इसके साथ ही दर्शन, शिक्षा, आत्मकथा, साहित्य, प्राकृतिक दृश्य, विज्ञान, राजनीतिक बातें, भौगोलिक विषय, संस्कृति एवं सभ्यता के संबंध में गद्यात्मक निबंधों को भी इसके अंतर्गत लिया जा सकता है। लक्ष्मी कुट्टी अम्मा के अनुसार, "गद्य, विचार-विनिमय का महत्त्वपूर्ण साधन है। वाक्यों में शब्दों के पिरोये जाने में भी विशेष कुशलता प्रदर्शित करने की आवश्यकता है। हर एक शब्द का स्थान, सार्थकता और महत्त्व और उसके आगे या पीछे आने वाली विभक्तियों और प्रत्ययों का समुचित मिलाप- इन सब पर ध्यान देना अनिवार्य है।[18]

रचना अध्ययन-अध्यापन

रचना अर्थात् "किसी भी कृति को सजाना, व्यवस्थित करना अथवा उसे क्रमबद्ध करना"।[19] हिंदी शिक्षण के अंतर्गत रचना का प्रथम रूप वाक्य-रचना से होता है। प्रारम्भिक कक्षाओं में छात्रों को वाक्य रचना सिखाई जाती है। इससे छात्रों में वाक्यों के बोलने, समझने एवं वाक्यों की प्रयुक्ति करने की समझ विकसित होती है। लक्ष्मी कुट्टी अम्मा के अनुसार, "रचनात्मक प्रवृत्तियों अर्थात् रचनाशिक्षण और दूसरे कार्यशीलनों के माध्यम से विद्यार्थी को भावी जीवन के लिए आवश्यक व्यावहारिक कुशलता, सन्तुलन, शक्ति और आनन्द प्राप्त कराने योग्य पाठ्यक्रम के निर्माण और वातावरण की सृष्टि पर आधुनिक शिक्षण-सिद्धान्त बल देता है।"[20] वे और आगे कहती है कि "आत्म-प्रकाशन की सहज कामना और महत्त्व-प्राप्ति की बलवती अभिलाषा की पूर्ति का सर्वोत्तम साधन है-रचना पाठ।... रचना-पाठ का सुव्यवस्थित आयोजन विद्यार्थियों को आत्म-प्रकाशन द्वारा व्यक्तित्व के विकास, सामाजिक जीवन में सन्तुलन और सामाजिक भलाई करने की प्रेरणा प्रदान करता है। यह आयोजन कर्मण्यता के प्रत्यक्ष-पाठ और सेवा-भाव के परोक्ष-पाठ से उन्हे परिचित करा कर, राष्ट्र-दर्शन के

अनुकूल उनको रूप और भाव देता है"। [21] इसमें पत्र-लेखन, निबंध लेखन, शुद्ध लेखन, पर्यायवाची शब्द लिखना, अनेकार्थवाची शब्दों के अर्थ लिखना, मुहावरों का प्रयोग, अपठित पद्यांश कार्य, अपठित गद्यांश कार्य. किसी महापुरुष की जीवनी लिखना, कहानी लिखना, कविता लिखना, संवाद रचना आदि को सिखाया जाता है।

नाटक अध्ययन-अध्यापन

प्राचीन काल से नाटक मनोरंजनात्मक शिक्षा का एक साधन के रूप में प्रयुक्त होता रहा है। नाटकों का प्रारंभिक रूप पहा था परंतु अब वह गद्य रूप में लिखा एवं पढ़ाया जा रहा हैं। नाटकों द्वारा छात्रों में कलात्मक एवं साहित्यिक विकास किया जाता है। छात्र इसके द्वारा विभिन्न प्रकार की कलाओं और साहित्यों को अवगत कर सकते हैं। इसमें छात्र की कल्पनात्मकता तथा निरीक्षणात्मकता का विकास होता है। इसमें वास्तविक जीवन का कल्पनात्मक ढंग से वर्णन किया जाता है। इसलिए नाटक छात्र के भावनिक विकास के लिए आवश्यक है। नाटक के अध्ययन-अध्यापन के लिए रंगमंच अभिनय और कक्षाभिन्य अभिनय का प्रयोग किया जता है। रंगमंच अभिनय में "छात्रों को विद्यालयों में या अन्य किसी स्थान पर नाटक का अभिनय रंगमंच तैयार करके कराया जाता है।" [22] कक्षाभिनय में कुछ नाटकों को कक्षाओं के लिए चुना जाता है। इसमें शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है।

कहानी अध्ययन-अध्यापन

हिंदी अध्ययन-अध्यापन में कहानी का विशेष महत्त्व होता है। शैशव काल से ही बालक अपने माता-पिता तथा परिजनों के द्वारा कहानी सुनते रहते हैं। कहानी जीवन से सम्बन्धित होती है। जिसका स्वरूप काल्पनिक और वास्तविक होता रहता है।

हिंदी अध्ययन-अध्यापन की समस्याएँ

अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया छात्र एवं अध्यापक के मध्य होती है। जिससे छात्र के चरित्र का निर्माण एवं व्यक्तित्त्व का विकास होता है, इसके साथ ही वह ज्ञान को अर्जित करता है। अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया में अगर बाधा आती हो तो छात्रों के मानसिक विकास में भी बाधाएँ / समस्याएँ आती हैं। महाराष्ट्र अहिंदी भाषी क्षेत्र है, इसलिए हिंदी विषय के छात्रों को और हिंदी अध्यापकों को विभिन्न प्रकार की समस्याएँ आती है। जिनका विशेष रूप से अनुसंधान होना आवश्यक है।

समस्याएँ

1. छात्रों पर मराठी भाषा का प्रभाव अधिक हैं।
2. ग्रंथालयों में पुस्तकों का अभाव हैं।
3. छात्र हिंदी में संवाद करने में अधिक रूचि नहीं रखतें।
4. अध्यापन के लिए समय की कमी होती हैं।
5. हिंदी भाषा के लिए तासिकाएँ कम होती हैं।
6. हिंदी के संदर्भ ग्रंथ, शब्दकोश उपलब्ध नहीं होते।
7. भौतिक सुविधाओं का अभाव दिखायी देता हैं।
8. महाराष्ट्र में हिंदी को दोयम स्थान दिया जाता हैं।

9. दृश्य-श्राव्य साधनों का अभाव हैं।
10. छात्रों में हिंदी में संवाद भाषण कौशल का अभाव हैं।
11. ग्रामीण बोलियों का छात्र एवं अध्यापकों पर प्रभाव दिखायी देता हैं।
12. अभिभावक एवं छात्र अंग्रेजी भाषा के प्रति अत्यधिक आकर्षित हैं।
13. हिंदी बोलते समय मराठी शब्दों का प्रयोग किया जाता हैं।
14. हिंदी भाषा का अपूर्ण ज्ञान होता हैं।
15. छात्रों में हिंदी भाषा सीखने में उदासीनता देखी जाती हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में महाराष्ट्र में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की समस्याओं का अध्ययन किया गया है। हिंदी अध्ययन-अध्यापन का स्वरूप व्यापक है, जिसमें छात्रों में हिंदी भाषा से संबंधित कौशलों का विकास किया जाता है, जैसे वाचन, लेखन, पठन आदि कौशलों के साथ ही छात्रों का जीवन की ओर देखने की दृष्टि का विकास किया जाता है। हिंदी अध्ययन-अध्यापन में हिंदी भाषा के व्याकरणिक पक्ष को महत्त्व दिया जाता है, उसी प्रकार उसमें रचनात्मकता का विकास किया जाता है। नाटकीय कौशल, कहानी के सस्वर पढ़ने तथा सृजित करने के कौशलों का विकास भी किया जाता है, जिसके लिए पाठ्यक्रम आवश्यक होता हैं, परंतु मूल्यांकन की प्रक्रिया भी उचित रूप में होना आवश्यक होता है। अतः सह-भाषा के रूप में अंग्रेजी का महत्त्व है, परंतु हिंदी को भी समान रूप से महत्त्व देना आवश्यक है। हिंदी तथा हिंदीत्तर भाषी क्षेत्रों में हिंदी भाषा-शिक्षण का महत्त्व भी बढ़ाना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. अंबादास देशमुख, "भाषिकी, हिंदी भाषा तथा भाषा-शिक्षण", अतुल प्रकाशन, कानपुर, 1999, पृ. 22.
2. वहीं पृ. 22.
3. वहीं पृ. 22.
4. रणजीत जाधव, "हिंदी साहित्य तथा भाषा को महाराष्ट्र की देन", विकास प्रकाशन, कानपुर, 2007, पृ. 45.
5. वहीं पृ. 46.
6. वहीं पृ. 46.
7. वहीं पृ. 46.
8. भोलानाथ तिवारी, "मानक हिंदी का स्वरुप", प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1996, पृ. 43.
9. डॉ. सुभाष चन्द्र गुप्ता, "हिंदी शिक्षण", के. एस. के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2007, पृ. 69.
10. वहीं पृ. 232.
11. वहीं पृ. 232 - 233.
12. वहीं पृ. 267.
13. वहीं पृ. 267.
14. वहीं पृ. 267.
15. लक्ष्मी कुट्टी अम्मा, "सम्पर्क भाषा हिंदी और शिक्षण", नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1968, पृ. 149.
16. वहीं पृ. 149

17. डॉ. सुभाष चन्द्र गुप्ता, "हिंदी शिक्षण", के. एस. के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2007, पृ. 273.
18. लक्ष्मी कुट्टी अम्मा, "सम्पर्क भाषा हिंदी और शिक्षण", नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1968, पृ. 119.
19. डॉ. सुभाष चन्द्र गुप्ता, "हिंदी शिक्षण", के. एस. के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2007, पृ. 325.
20. लक्ष्मी कुट्टी अम्मा, "सम्पर्क भाषा हिंदी और शिक्षण", नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1968, पृ. 139.
21. वहीं पृ. 139.
22. डॉ. सुभाष चन्द्र गुप्ता, "हिंदी शिक्षण", के. एस. के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2007, पृ. 424